TOPIC:-*QUESTIONNAIRE.*

PAPER NAME: - DISSERTATION.
SUBJECT: - GEOGRAPHY
SEMESTER: - M.A. –IV.
PAPER CODE: - (GEOG. 404)

UNIVERSITY DEPARTMENT OF GEOGRAPHY,
DR. SHYMA PRASAD MUKHERJEE UNIVERSITY,
RANCHI.

इकाई – 11 प्रश्नावली एवं व्यक्ति अध्ययन विधि

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 प्रश्नावली – एक परिचय
11.4 प्रश्नावली के प्रकार
11.5 अच्छी प्रश्नावली की विशेषतायें
11.6 प्रश्नावली का निर्माण
11.7 व्यक्ति अध्ययन : एक परिचय
11.8 व्यक्ति अध्ययन की प्रकृति
11.9 व्यक्ति अध्ययन के पद
11.10 व्यक्ति अध्ययन के गुण एवं दोष
11.11 सारांश
11.12 अभ्यास प्रश्न
11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

अनुसनान कार्यों में बहुतायत से प्रयोग होने वाला उपकरण प्रश्नावली है। प्रश्नावली का प्रयोग व्यैक्तिक एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। इसका निर्माण एवं प्रयोग भी सरल है। वास्तव में प्रश्नावली द्वारा सूचनाओं को गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूपों में लिखित रूप में प्राप्त किया जाता है। इसीलिये इसकी वैधता एवं विश्वसनीयता पर्याप्त होती है। लेकिन व्यक्ति अध्ययन में किसी एक व्यक्ति के बारे में अध्ययन न होकर एक प्रकार के व्यक्ति के बारे में अध्ययन किया जाता है। मूलतः व्यक्ति अध्ययन विधि का प्रयोग चिकित्सा क्षेत्र से प्रारम्भ हुआ था। फ्रायड ने इसी अध्ययन विधि का प्रयोगकर विभिन्न नियम एवं सिद्धान्त प्रतिपादित किये। इस विधि में वर्तमान को भूतकाल की घटित घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया जाता है। प्रश्नावली के प्रकार, उसकी विशेषतायें, व्यक्ति अध्ययन विधि के विभिन्न पद तथा उसके गुण एवं दोषों को समझना आवश्यक है। इन उपकरणों के बारे में जाने बिना इनका सार्थक उपयोग संभव नही है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

1. प्रश्नावली के विभिन्न प्रकारों को जान सकेंगे।

2. प्रश्नावली के निर्माण करने की योग्यता अर्जित कर सकेंगे।
3. प्रश्नावली विशेषताओं को बता सकेंगे।
4. व्यक्ति अध्ययन विधि को जान सकेंगे।
5. व्यक्ति अध्ययन के विभिन्न पदों को प्रयोग कर सकेंगे।
6. व्यक्ति अध्ययन विधि के गुण–दोषों को स्पष्ट कर सकेंगे।

11.3 प्रश्नावली–एक परिचय

प्रश्नावली प्रश्नों या कथनों का समूह हैं, जिसके माध्यम से व्यक्ति से पूछकर सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं। यह निर्माण में एक आत्मनिष्ठ तथा प्रयोग में वस्तुनिष्ठ विधि है तथा इसका प्रयोग तब किया जाता है जब तथ्यात्मक सूचनाओं की आवश्यकता होती है। प्रश्नावली का निर्माण इस प्रकार किया जाता है जिससे व्यक्ति के वांछित गुणों का मापन हो सके। प्रश्नावली का प्रयोग व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। यदि प्रश्नावली का प्रयोग समूह के लिए किया जाता है तो यह समय, धन और श्रम की बचत करने मे सहयोगी होता है ।

11.4 प्रश्नावली के प्रकार

1. संरचना के आधार पर प्रश्नावली दो प्रकार की होती है।

(अ) बन्द या संरचित प्रश्नावली – इस प्रकार की प्रश्नावली के प्रश्नों का स्वरूप ऐसा होता है जिनके सम्भावित उत्तर दे दिये जाते हैं तथा व्यक्ति को इन उत्तरों में से एक उत्तर को चुनकर प्रश्न का उत्तर देना होता है, इस प्रकार की प्रश्नावली को प्रतिबन्धित संरचित या बन्द प्रकार की प्रश्नावली कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति को इस बात के लिए बाध्य किया जाता है कि वह दिये गये वैकल्पिक उत्तरों में से किसी एक विकल्प को चुने। दिये गये वैकल्पिक उत्तर हॉ या नहीं में हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए –

आपको घर में पढ़ाई में कौन सहायता देता है ?

1. माँ 2. पिता 3. भाई 4. बहन 5. अन्य

इस प्रकार की प्रश्नावली को छात्रों पर प्रशासित करना सुविधाजनक होता है, इसको भरना या उत्तर प्राप्त करना सरल है तथा इसमें कम समय लगता है। यह एक वस्तुनिष्ठ विधि है। इसका अंकन, सारणीयन और परिणामों का विश्लेषण अपेक्षाकृत सरल होता है।

इस प्रश्नावली की कमी यह है कि इसमें उत्तर का चुनाव प्रतिबन्धित होता है यह भी हो सकता है कि दिये गये वैकल्पिक उत्तरों में वह उत्तर सम्मिलित न हो जो छात्र देना चाहता हो। इसी दोष को दूर करने के लिए विकल्पों के साथ एक विकल्प अन्य श्रेणी का होना चाहिए।

(ब) खुली या असंरचित प्रश्नावली – इस प्रकार की प्रश्नावली में छात्रों को दिए गए प्रश्नों का उत्तर अपने शब्दों में देना होता है। यहां पर प्रश्नों के कोई भी सम्भावित उत्तर नहीं दिये जाते हैं। यद्यपि इन प्रश्नावलियों के द्वारा व्यक्ति स्वतन्त्र विचार एवं भावनाएं व्यक्त करता है लेकिन इस प्रकार से प्राप्त उत्तरों का अंकन एवं परिणामों का विश्लेषण करना असुविधाजनक एवं कठिन होता है।

उदाहरण के लिए–

आपको घर में पढ़ाई में कौन सहायता करता है ?

....

....

बहुत सी प्रश्नावलियों में खुले तथा बन्द दोनो प्रकार के प्रश्न होते हैं। सूचना संकलन के लिए कौन सी प्रश्नावली उपयुक्त है इसका निर्णय प्रश्नावली का निर्माणकर्ता अपने उद्देश्य एवं जीवसंख्या के ध्यान में रख कर करता है।

2. **प्रशासन के आधार** पर प्रश्नावली दो प्रकार की होती है –

(अ) डाक प्रश्नावली – जब प्रयोज्य दूर रहता है तो उसे डाक द्वारा प्रश्नावली भेजकर भी आवश्यक सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं। इस प्रश्नावली को डाक प्रश्नावली कहा जाता है। प्रश्नावली के साथ प्रश्नावली के प्रश्नों का उत्तर देने सम्बन्धी निर्देश तथा एक लिफाफा भी भेज दिया जाता है। इस प्रकार की प्रश्नावली के प्रशासन में समय का व्यय अधिक होता है परन्तु व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रयोज्य के सम्मुख उपस्थित होने की बाध्यता नहीं रहती। इस विधि के प्रशासन करने पर भरी हुयी प्रश्नावलियां प्राप्त करने में अधिक समय लगता है क्योंकि सूचना संकलनकर्ता के प्रत्यक्ष न होने पर लोग प्रश्नावली भरने में रूचि कम लेते हैं और समय पर वापस नहीं करते हैं। इसलिए इस प्रकार की प्रश्नावली का प्रयोग करते समय सूचना संकलनकर्ता को बार–बार स्मरण पत्र भेजना चाहिए तथा सम्पर्क में रहना चाहिए।

(ब) प्रत्यक्ष प्रश्नावली – इस प्रकार की प्रश्नावली का प्रशासन शोधकर्ता अपनी उपस्थिति में करता है। इस ढ़ंग की प्रश्नावली के क्रियान्वयन करने में शोधकर्त्ता स्वयं समूह में खड़ा होकर निर्देश देता है तथा आने वाली समस्याओं का समाधान भी करता है। इस प्रकार की प्रश्नावली को प्रत्यक्ष प्रश्नावली कहते हैं। इस प्रकार की प्रश्नावली के प्रशासन में श्रम अधिक लगता है परन्तु सूचनाओं का संकलन ठीक प्रकार से हो जाता है और भरी हुयी प्रश्नावली समय से प्राप्त हो जाती है।

11.5 एक अच्छी प्रश्नावली की विशेषताएं

एक अच्छी प्रश्नावली में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए।

1. प्रश्नावली के महत्व को प्रश्नावली के प्रारम्भ में स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए या लिख देना चाहिए। प्रश्नों का संबन्ध शोध विषय से सीधा एवं स्पष्ट होना चाहिए ताकि सही उत्तर मिल सके।

2. प्रश्नावली की लम्बाई कम होनी चाहिए अर्थात प्रश्नों की संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए। बहुत अधिक प्रश्नों वाली प्रश्नावली के सही उत्तर नहीं मिल पाते हैं।
3. एक अच्छी प्रश्नावली में दिये गये निर्देश स्पष्ट एवं पूर्ण होते हैं तथा सभी पदों को पारिभाषित भी किया गया होता है।
4. प्रश्न की शब्दावली स्पष्ट एवं सरल होनी चाहिए।
5. प्रश्नावली के प्रश्न वस्तुनिष्ठ होने चाहिए।
6. प्रश्नावली में प्रश्नों को मनोवैज्ञानिक तरीके से व्यवस्थित किया जाना चाहिए। पहले सामान्य तथा बाद में अधिक विशिष्ट प्रश्न पूछे जाने चाहिए।
7. जहां तक सम्भव हो उत्तेजित करने वाले प्रश्नों को प्रश्नावली में नहीं रखना चाहिए।
8. प्रश्नावली के प्रश्न इस प्रकार के होने चाहिए कि उनका अंकन तथा विश्लेषण की प्रविधि का निर्धारण पहले से ही कर लेना चाहिए।
9. प्रश्नावली दिखने में आकर्षक, साफ सुथरी एवं अच्छी तरह छपी होनी चाहिए।

11.6 प्रश्नावली का निर्माण

प्रश्नावली के निर्माण में प्रश्नों का चुनाव निम्नलिखित कसौटी पर आधारित होना चाहिए –

1. प्रश्नावली के माध्यम से वही सूचनाएं एकत्रित की जानी चाहिए जो अन्य स्रोतों से प्राप्त न हो सके।
2. प्रश्नावली में केवल उपयुक्त एवं उपयोगी प्रश्न होने चाहिए।
3. प्रश्नावली की शब्दावली में व्याकरण की दृष्टि से दोष नही होना चाहिए।
4. इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु पर्याप्त विकल्प दिए गये हों ।
5. उन शब्दों को रेखांकित कर देना चाहिए जिन्हें आप विशेष महत्व देना चाहते हैं।
6. कथन संक्षिप्त होने चाहिए, अधिक से अधिक बीस शब्दों के।
7. प्रश्नों का निर्माण करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे सभी के लिए उपयुक्त हो।
8. प्रश्नावली में दोहरे नकारात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

प्रश्नावली की वैधता तथा विश्वसनीयता –

सामान्यतः प्रश्नावली की वैधता तथा विश्वसनीयता को शोधकर्ता स्थापित नहीं करते हैं। इसका कारण शायद यह होता है प्रश्नावली, मनोवैज्ञानिक परीक्षणों

की अपेक्षा सीमित उद्देश्य के लिए बनाए जाते हैं। इसके द्वारा एक बार ही आंकड़ों का संग्रह किया जाता है । कम जनसंख्या पर प्रशासित किये जाते हैं। इन कारणों के बाद भी प्रश्नावली की वैधता तथा विश्वसनीयता स्थापित करने की विधियां हैं।

प्रश्नावली की वैधता का तात्पर्य प्रश्नावली के माध्यम से सही प्रश्न पूछने से है जिनका निर्माण इस प्रकार किया गया हो कि प्रश्नों के वही अर्थ निकले जो प्रश्नावली निर्माणकर्ता के विचारों से संगतता लिए हों। प्रश्नावली में प्रयुक्त शब्द इस प्रकार परिभाषित किये गये हों कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उनका अर्थ एक जैसा हो। सामान्यतः प्रश्नावली की विषय–वस्तु वैधता ही स्थापित की जाती है। कुछ प्रकार की प्रश्नावलियों की ही पूर्व–कथन वैधता ज्ञात करना सम्भव होता है।

प्रश्नावली की विश्वसनीयता परीक्षण – पुनः परीक्षण विधि से निकाली जाती है। सामान्तर प्रारूप विधि से भी प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात की जाती है।

11.7 व्यक्ति अध्ययन : एक परिचय

व्यक्ति अध्ययन विधि एक ऐसी विधि है जिसमें किसी सामाजिक इकाई के जीवन की घटनाओं का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाता है। सामाजिक इकाई के रूप में किसी एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक समुदाय आदि के बारे में अध्ययन किया जा सकता है। व्यक्ति–अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान को समझना, उन भूतकालीन घटनाओं का पहचानना जिनके कारण वर्तमान स्थिति पैदा हुई तथा उन कारकों को जानना जो भविष्य में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक है।

व्यक्ति–अध्ययन विधि में किसी एक व्यक्ति के बारे में अध्ययन न होकर बल्कि एक प्रकार के व्यक्ति के बारे में अध्ययन होता है। अध्ययन के बाद समान प्रकार के केस में इसका सामान्यीकरण किया जा सकता है।

11.8 व्यक्ति अध्ययन की प्रकृति :

व्यक्ति–अध्ययन का मूलतः प्रयोग मेडिकल के क्षेत्र में शुरू हुआ था। किसी रोगी के पूर्व–विकास, स्वास्थ्य आदि के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है। फ्रायड ने अपने प्रयोज्यों के व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याओं के समाधान में उनकी सहायता के लिए व्यक्ति–अध्ययन का प्रयोग किया। परामर्शदाता तथा सामाजिक कार्यकर्ता किसी विशेष समस्या के निदान तथा उसके समाधान के लिए व्यक्ति–अध्ययन का प्रयोग करते हैं।

व्यक्ति–अध्ययन गुणात्मक प्रकार का शोध है। इसमें किसी एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक समुदाय आदि का गहन तथा विस्तृत अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के शोध में लम्बवत उपागम (Longitudinal Approach) का अनुसरण किया जाता है। इस प्रकार के शोध में आंकड़ो का संकलन

अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, रिकार्ड किये गये साक्ष्यों (प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों) आदि के द्वारा किया जाता है।

11.9 व्यक्ति–अध्ययन के पद

व्यक्ति अध्ययन में निम्नलिखित पदों को सम्मिलित किया जाता है।

1. सबसे पहले प्रत्यक्ष अवलोकन के द्वारा किसी व्यक्ति या सामाजिक इकाई के वर्तमान स्थिति के बारे में निश्चय किया जाता है। इस पद में अवलोकनकर्ता केवल सतही अवलोकन करके उसके बारे में विवरण प्रस्तुत करता है। यदि किसी अपराधी बालक का व्यक्ति–अध्ययन किया जाता है तो उसकी शारीरिक रचना, संज्ञानात्मक तथा गैर–संज्ञानात्मक कारकों का अध्ययन प्रत्यक्ष अवलोकन तथा मानवीकृत परीक्षणों जैसे बुद्धि, अभिक्षमता, अभिवृत्ति, मूल्यों, व्यक्तित्व, रूचि आदि का अध्ययन किया जाता है।

2. प्रयोज्य की समस्या के लिए सबसे अधिक जिम्मेदारी सम्भावित कारणों को निश्चित किया जाता है या पहचान की जाती है। इसके बाद एक या आवश्यकता होने पर एक से अधिक परिकल्पनाएं बनायी जाती है। यह परिकल्पनाएं दूसरे समान समस्या के ग्रसित प्रयोज्यों के आधार पर बनायी जाती है ।

   यदि हम किसी पिछड़े बालक का व्यक्ति–अध्ययन करना है तो इसके कई कारण हो सकते हैं – जैसे घर के वातावरण का ठीक न होना, स्कूल में सही पढ़ाई न होना, मानसिक क्षमता में कमी होना। इन कारणों के आधार पर परिकल्पनाओं का निर्माण किया जा सकता है।

3. इस पद में परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाता है। उन सम्भावित कारणों को दूर किया जाता है जिसके कारण समस्या पैदा हुयी है। अनुसंधानकर्ता प्रयोज्य की वर्तमान स्थिति तथा उसके बीते हुए समय (इतिहास) के बारे में जानने का प्रयास किया जाता है। व्यक्तिगत अभिलेखों जैसे डायरी तथा पत्रों का प्रयोग किया जा सकता है। साक्षात्कार तथा प्रश्नावली के द्वारा वर्तमान स्थिति का पता लगाया जाता है। शिक्षकों, मित्रों, अभिभावकों, भाई–बहनों तथा दूसरे परिवार के लोगों के द्वारा आंकड़ो को एकत्रित किया जा सकता है।

4. परिकल्पनाओं के परीक्षण के बाद कारणों का निदान किया जाता है। इन कारणों के ध्यान में रखते हुये कुछ उपचारात्मक तरीकों को सुझाया जाता है।

5. अन्त में प्रयोज्य के लिए अनुगामी सेवाओं (Follow-up) को दिया जाता है । प्रयोज्य का दूसरी बार परीक्षण किया जाता है तथा यह देखने का प्रयास किया जाता है कि जो उपचारात्मक सुझाव दिये गये थे उसके प्रयोग से समस्या का समाधान हुआ कि नहीं। यदि परिवर्तन सकारात्मक

होते हैं तो समस्या का निदान सही समझा जाता है। यदि समस्या का समाधान नहीं होता है तो फिर से दूसरे सम्भावित कारणों के आधार पर परिकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है। इसके बाद परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाता है तथा कारणों का निदान किया जाता है तथा उपचार सुझाए जाते हैं।

11.10 व्यक्ति–अध्ययन के गुण एवं दोष

व्यक्ति अध्ययन विधि के निम्न गुण हैं –

1. व्यक्ति अध्ययन में लम्बवत उपागम (Longitudinal Approach) का प्रयोग किया जाता है। अध्ययन के लिए चयन किए गये प्रयोज्य का गहन रूप से अध्ययन संभव होता है क्योकि इसमें एक समय में किसी एक व्यक्ति या सामाजिक इकाई का ही अध्ययन किया जाता है।
2. व्यक्ति अध्ययन विधि से प्राप्त तथ्यों को शोधकर्ता विश्वास के साथ सामान्यीकृत तो नहीं कर पाता है लेकिन इन तथ्यों के आधार पर वह आसानी से कुछ परिकल्पनाओं का सृजन कर पाता है।
3. व्यक्ति अध्ययन विधि प्राप्त तथ्यों के आधार पर भविष्य में किए जाने वाले अध्ययनों में उत्पन्न होने वाले कठिनाइयों को पहले से ही समझा जा सकता है तथा उसे दूर करने के उपायों का वर्णन किया जा सकता है।

व्यक्ति अध्ययन विधि के कई दोष भी है जो निम्नलिखित हैं –

व्यक्ति अध्ययन के दोष –

1. व्यक्ति अध्ययन विधि में आत्मनिष्ठता अधिक पायी जाती है, इस कारण निष्कर्ष की वैधता प्रभावित होती है। इस विधि में शोधकर्ता तथा अध्ययन के लिए चुने गये व्यक्ति तथा सामाजिक इकाई के बीच अधिक घनिष्ठता होने के कारण जो भी तथ्य प्राप्त किए जाते हैं उनका सही सही तथा वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन नहीं हो पाता है।
2. व्यक्ति–अध्ययन विधि में शोधकर्ता की पूर्ण जवाबदेही इस बात की होती है कि वह व्यक्ति या सामाजिक इकाई का पूरा इतिहास तैयार करे। शोधकर्ता सामाजिक इकाई के बारे में बहुत सारी सूचनाओं की तैयारी करता है तथा उनका विश्लेषण करता है। शोधकर्ता द्वारा प्राप्त की गयी सूचनाओं की वैधता की जांच करने का कोई तरीका इस विधि में नहीं बतलाया गया है। इस कारण यह विधि पूर्णरूप से वैज्ञानिक विधि नहीं मानी जा सकती है।
3. इस विधि में समय बहुत लगता है क्योंकि शोधकर्ता को प्रयोज्य के सभी पहलुओं भूत, वर्तमान तथा भविष्य को ध्यान में रखकर अध्ययन करना होता है। यह एक खर्चीली विधि भी है क्योंकि इसमें धन की बर्बादी बहुत होती है।

4. इस विधि में शोधकर्ता व्यक्ति से उनके गत अनुभूतियों एवं घटनाओं के बारे में पूछकर इतिहास तैयार करता है। बाद में इन अनुभूतियों का विश्लेषण का निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। व्यक्ति अपने गत अनुभूतियों को विशेषकर उन अनुभूतियों जो काफी पहले घटित हुयी है उनको सही तरीके से नहीं बतला पाता है। सूचनाएं वैध नहीं हो पाती है।
5. शोधकर्ता किसी एक व्यक्ति या सामाजिक इकाई का अध्ययन कर निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच जाना चाहता है। किसी एक केस के अध्ययन के आधार पर लिया गया निष्कर्ष सही नहीं होता। इस प्रकार से किए गये अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता है।

किसी समुदाय का अध्ययन यदि हम व्यक्ति–अध्ययन से करें तो इसको इस प्रकार से किया जा सकता है। एक साथ एक भौगोलिक स्थान में रहने वाले समूह के व्यक्तियों के बारे मे गहन अवलोकन तथा विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन में किसी समुदाय के लोगों के विभिन्न तथ्यों जैसे रहने का स्थान, आर्थिक क्रियाकलाप, जलवायु तथा प्राकृति संसाधनों के बारे में, ऐतिहासिक विकास, जीवन शैली, सामाजिक संरचना, जीवन मूल्यों तथा ऐसे लोगों का अध्ययन जिनका उस समुदाय पर प्रभाव हो आदि का अध्ययन किया जाता हे। इसमें उन सामाजिक संस्थाओं का मूल्यांकन भी किया जाता है जो मनुष्यों की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करती है।

11.11 सारांश

प्रश्नावली सूचनायें प्राप्त करने की एक वस्तुनिष्ठ विधि है। यह प्रश्नों का एक समुच्चय रूप होती है। संरचना एवं प्रशासन की दृष्टि से प्रश्नावली के विभिन्न रूप होते हैं। इसका निर्माण एवं प्रयोग सरल होता है। जबकि व्यक्ति अध्ययन विधि में व्यक्ति, समुदाय या संस्था विशेष की वर्तमान स्थिति को भूतकालीन घटनाओं के संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास किया जाता है। आत्मनिष्ठता होने के बाद भी इस विधि में विभिन्न पदों का अनुसरण कर इसकी वस्तुनिष्ठता बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। इस इकाई में प्रश्नावली एवं व्यक्ति अध्ययन विधि की विशेषताओं, रूपों एवं इनके गुण–दोषों की चर्चा की गयी है।

11.12 अभ्यास प्रश्न :

1. प्रश्नावली के विभिन्न रूप कौन–कौन हैं ?
2. व्यक्ति अध्ययन विधि क्या है ?
3. एक अच्छी प्रश्नावली की क्या विशेषतायें होती हैं ?
4. व्यक्ति अध्ययन के कौन–कौन से पद हैं ?
5. व्यक्ति अध्ययन विधि के गुणों एवं दोषों को स्पष्ट कीजिये ।
6. प्रश्नावली निर्माण की कसौटियाँ क्या हैं ?

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सिध्धू, कुलबीर सिंह	:	मैथडलॉजी ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, स्टर्लिग पब्लिकेशन प्रा0लि0, नई दिल्ली 2007।
सिंह, राम पाल,	:	शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2005।
श्रीवास्तव, डी0एन0	:	मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2006।
गुप्ता, एस0पी0	:	आधुनिक मापन और मूल्यांकंन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2010।